यात्रा समीक्षा

बारह तेरह जनवरी दो हजार छ की बैठक म एक अगस्त पूना से दो अक्टूबर गांधी समाधि राजघाट की यात्रा की योजना घोषित हुई थी जिसमें मैं (बजरंगलाल) आचार्य पंकज, रमांकान्त जी पांडे पूरी यात्रा में तथा गोविन्दाचार्या जी कहीं कहीं सम्मिलित थें। रमाकन्त जी के उमा भारती जी के दल में लग जाने के कारण हम दो लोग ही यात्रा में पूरे समय रह सकें। गोविन्दाचार्य जी को अम्बिकापुर की मीटिंग में आना था किन्तुं अन्यत्र व्यस्तता के कारण वे नही आ सके।

वैसे तो जनवरी से ही कैलाश आदिम जी यात्रा के निमित्त पूरे भारत का भ्रमण करते रहे किन्तु कार्य अधिक होने के कारण बाद में उत्तर प्रदेश का कार्य आचार्य पंकज जी राजस्थान अशोक गाडिया जी को सौंपकर मुख्य रूप से मध्यप्रदेश महाराष्ट्र तथा कुछ अन्य के तीस कार्यक्रमों का दायित्व उन्हें दिया गया। शेष अन्य क्षेत्रों का दायित्व अलग अलग लोगों को अलग अलग बांटा गया। सब लोग अपने अपने क्षेत्रों में सक्रिय रहे और जुलाई से कार्यक्रम होना था किन्तु बाईस जुलाई माननीय लोकमान्य तिलक और चन्द्रशेखर आजाद की जन्मतिथियों के साथ जोडते हुए बाइस तारीख को ही दिल्ली से यात्रा प्रारंभ हुई जिसे औपचारिक स्वरूप एक अगस्त को पूना में दिया गया। हमारी यात्रा में दो अक्टूबर दिल्ली को छाडकर तिरान्नवे स्थानों पर कार्यक्रम घोषित थे जिनमें से केरल,तमिनाडु,सीवान, फैजाबाद, हरिद्वार, विकासनगर, संगरूर, राजसमद, गांधीनगर, देवास, रायसेन, जबलपूर, अनूपपुर, गढवा, गया, औरंगाबाद, सासाराम, मोहनिया, गाजीपुर, मऊ,प्रतापगढ, सुल्तानपुर, कानपुर, दिल्ली, ग्वालियर, मुरैना, अशोक नगर, गुना, शिवपुरी, रीवा, मिर्जापुर, बांदा, झांसी, उरई, औरैया, इटावा, आगरा, मथुरा, सीधी में आयोजकों की कमजोरी या अन्य उनकी कठिनाइयों के कारण कार्यक्रम स्थगित करने पडे। आत्माराम शर्मा चातक जी द्वारा आयोजित पांच कार्यक्रमों में से सिर्फ एक सतना सम्पन्न हुआं वह भी नये आयोजक द्वारा सम्पन्न हुआ जिसमें चातक जी नही आ सकें। योगेन्द्र सिन्हा जी के चार कार्यक्रमों में से एक पटना का हुआ यद्यपि पटना के कार्यक्रमों की सफलता ने तीन क रद्द होने का दर्द मिटा दिया। अशोक भाई द्वारा आयाजित पांच कार्यक्रम उनके परिवार में अप्रत्याशित बीमारी के कारण स्थगित हुए । इन्हे निरस्त नही माना जा सकता है। सीधी हम समय से पहुंच गये किन्तु ऐन वक्त पर कार्यक्रम मानस भवन से बदलना पडा। इसके कारण सीधी का कार्यक्रम शुरू नही हुआ। कार्यक्रम दस बजे से बारह बजे तक था किन्तु अव्यवस्था हाने से हम ग्यारह बजे ही आगे बढ गये। मानस भवन आने वालों में से कुछ फोन भी बाद में आये जिनके कष्ट को हम महसूस करते है। कैलाश जी पर पडे क्षमता से अधिक बोझ को भांपकर हमने उन क्षेत्रों में योगेन्द्र भाई को भी भेजा किन्तु वे भी एक दो स्थान ही जा सके। भविष्य में हमें इस संबंध में और अधिक सतर्कता से घोषणाएँ करनी होगी, क्योकि चौरान्नवे में से बयालीस कार्यक्रमों का निरस्त या स्थगित होना साधारण बात नहीं है।

कार्यक्रमों की उपस्थिति योग्यता आयोजक की सक्रियता आदि का मूल्यांकन करते हुए हमने चार श्रेणियों अ,ब,स,ड,बनाई थी। सामान्यता अस्सी से अधिक की उपस्थिति का अ,चालीस तक को ब बीस तक को स और बीस से कम को ड श्रेणी में रखा गया। भाषण सुनने के निमित्त न आये हुए लोगों को नही गिना गया। श्रेणीबद्ध गिनती के अनुसार अ श्रेणी में दिल्ली, रायपुर, दुर्ग, धनबाद, गोन्डा, बरेली, बडौत, बागपत, नोयडा, भीलवाडा, चित्तौरगढ, उदयपुर, उज्जैन, अम्बिकापुर, देवरिया, वाराणसी, जौनपुर मिलाकर अठारह स्थान शामिल रहे। गोन्दिया, धारवाड, हुबली ,पटना, गोपालगंज, हिमाचल, कांगडा का टम्बर, पंजाब का शेरपुर, हरियाणा का सोनीपत, जयपुर, बलिया, लखनउ, मिलाकर ग्यारह स्थान व नागपुर, बेगूसराय, राजगीर, कुशीनगर, गोरखपुर, सीतापुर, देहरादुन, शिमला, कुरूक्षेत्र, इन्दौर, बीना, सतना, सोनभद्र, भोपाल, इलाहाबाद मिलाकर पंद्रह को स श्रेणी और शेष जलगांव, पूना, शोलापूर, कलकत्ता, उत्तराँचल का बिलासपुर, पंचकुला, पानीपत, सागर को ड श्रेणी में माना गया। गोरखपुर में दो आयेजकों में तारतम्य का अभाव कारण बना। सागर में आयोजक की अरूचि दिखाई दी गोपालगंज में पद्रह अगस्त के दिन में दस बजे का प्रभाव पडा गोरखपुर में जन्माष्टमी का भी कुछ प्रभाव पडा।

खर्च के आधार पर यदि मूल्यांकन करें तो खर्च के आधार पर व्यवस्था परिवर्तन में नोयडा के घनश्याम गर्ग जी का सर्वाधिक था। दिल्ली और उदयपुर में अशोक गाडिया जी, धनबाद में कृष्ण कुमार जी रूगटा, बरेली में राजीव अग्रवाल जी, ने भी काफी धन खर्च किया। बडौत और बागपत में भी महावीर जी की व्यवस्था थी जिसमें काफी खर्च हुआ। किसने किया यह नही मालूम। एक साथी ने खर्च के लिये दस हजार रूपया चन्दा लेकर खर्च किया। अन्य कार्यक्रम सामान्य आर्थिक खर्च के थें जो कुछ साथियों ने चन्दा करके और कुछ ने अपने पास से किया होगा। इलाहाबाद के आयोजक की स्थिति भापकर हमने कुछ आंशिक सहायता का वचन दिया। भोपाल में मीटिंग स्थल के मंदिर और चिकित्सालय निर्माण के निमित्त हमसे किसी स्वैच्छिक बडी दान राशि की मांग की गई जिसे हमने अस्वीकार कर दिया। अन्य सभी स्थानों पर किसी ने हमसे न कुछ मांगा न हमने दिया। अनेक स्थानों पर आर्थिक दृष्टि से कमजोर साथियों ने भी यथा शक्ति खर्च करके व्यवस्था और सभा को अच्छे बनाने की कोशिश की ।

हमने कहीं भी यात्रा व्यय के मिमित्त न कुछ मांगा न कुछ अप्रत्यक्ष प्रेरणा दी। इसके बाद भी जलगांव, शोलापुर, कलकत्ता, गोण्डा, बरेली, सीतापुर, देहरादुन, बडौत, बागपत, उज्जैन, वाराणसी आदि में कार्यकताओं ने औसत 500 रूपये का रास्ता खर्च दिया। सर्वाधिक आर्थिक सहायता देवरिया से मिलो जों तीन लोग एक एक हजार देकर संरक्षक सदस्य बने। इंदौर में यशवन्त राय जी तथा जलगांव में राणे जी पिछले वर्ष से ही संरक्षक सदस्य रहे है। उन्हाने नये वर्ष का शुल्क प्रदान दिया। ज्ञान तत्व के भी ग्राहक बने। दस स्थानों पर पाँच पाँच सौ रूपये देकर आजीवन ग्राहक भी बने। कई लोगो ने ज्ञान तत्व के ग्राहक बनानं हेतु रसीद बुक ले ली और ग्राहक बनाने का वचन दिया।

हम यह महसूस करते है कि मीडिया हमें सहयोग नही कर रहा है। इस यात्रा में हमें मानना पडा कि हमारी धारणा गलत थी। सच्चाई यह है कि जब तक धरातल पर हमारा कार्य समाचार लायक नही होगा तब तक मीडिया से अपेक्षा व्यर्थ है। यह अलग बात है। कि कुछ आर्थिक व्यवस्था करके अल्पकाल के लिये मीडिया का उपयोग कर लें। यह हमारे लिये कठिन कार्य है। इस बार की यात्रा में मीडिया का उम्मीद से कई गुना अधिक सहयोग प्राप्त हुआ। हमारे कार्यक्रम के दूसरे दिन रायपुर के प्रेस क्लब ने मीट टू प्रेस कार्यक्रम में बुलाकर हमारा सम्मान किया। जलगांव के अखबारों में भी समाचार छपे। शोलापुर में अखबारों ने तो मराठी भाषा में समाचार छापा ही किन्तु एक बहु प्रसारित टी,बी,चैनल ने अपने प्रसारण स्थल पर आंमंत्रित करक मेरा 30 मिनट का साक्षात्कार प्रसारित किया। कर्नाटिक में कन्नड भाषा में सामाचार को बहुत बडा स्थान अखबारों ने दिया। चौपन जिला सोनभद्र उत्तर प्रदेश में आकाशवाणी ने 25 मिनट का प्रसारण तैयार किया। पूरे देश के अन्य अनेक स्थानो में समाचार पत्रों और टीवी चैनलों ने यात्रा के सामाचार को व्यापक कवरज दिया। यह अलग बात है कि भाषण देकर आगे बढ जाने के कारण अखबारों की पूरी जानकारी हमें नही मिल पाती थी। दिल्ली आने के बाद हमें कई जगह के अखबारों की कटिंग देखने को मिली जिनका आना अभी जारी है। मीडिया के अधिक रूचि का कारण यह था कि हमारी यात्रा सिर्फ सूचना मात्र न होकर वह एक सामाचार थी क्योकि हम वर्तमान व्यवस्था का विकल्प बता रहे थे।

इस यात्रा में बडी मात्रा में नवयुवकों ने विषय का समझा। पूना में तो उपस्थित नवयुवकों ने स्वस्फूर्त खडे होकर ऐसी प्रतिज्ञा की रायपुर के एक प्रमुख नवयुवक महेन्द्र मुकीम ने आगे का दायित्व स्वीकार किया। राजगीर में भी युवकों ने ही पूरी व्यवस्था की थी। राजगीर में तो निर्मल जी ने हाथ जोडकर निवेदन किया कि अगला वार्षिक कार्यक्रम राजगीर में ही रखा जाय। वार्षिक कार्यक्रम में आये हुए देश भर के भोजन निवास की व्यवस्था राजगीर के लोग करेंगे। उनके निवेदन को स्वीकार करना हमारा अधिकार क्षेत्र न हाने से हम उनका आग्रह स्वीकार न कर सके। कुशीनगर उ0 प्र0 में भी यवकों में बहुत उत्साह दिखा। गोण्डा और बरेली में पूरा अयोजन युवा पीढी के हाथों में था। कुरूक्षेत्र में एक नवयुवक रवि सिंगला बहुत अधिक प्रभावित हुआ। और उसने पूरा सहयोग और समर्थन का वचन दिया। इलाहाबाद का तो पूरा आयोजन ही युवकों की व्यवस्था पर केन्द्रित थां। अन्य अनेक स्थानों पर युवकों का भरपूर समर्थन मिला। युवा और बुजुर्ग की कार्यक्षमता का आकलन करके ही मुझे भोपाल में यह कहना पडा कि अभिषेक अज्ञानी जी यदि कैलाश आदमी जी की जगह होते तो शायद इस यात्रा का स्वरूप कुछ और ही होता । कैलाश आदमी जी की उम्र का प्रभाव अभिषेक के अभाव की याद करा गया और मैने सभा में ही अभिषेक जी से इच्छा प्रकट की कि यदि इस आंदोलन की सफलता क लिये उनकी ज्यादा आवश्यकता महसूस की गई तो मजबुरी में हम उनसे पुनः एक वर्ष के समय की याचना करेगे। हमारे निवेदन पर उन्होने पुनः एक वर्ष के समय की याचना करेंगे। हमारे निवेदन पर उन्होनें गंभीर विचार का आश्वासन दिया।

कई स्थानों पर कुछ विशेष घटनाएँ भी हुई। महाराष्ट्र के गोन्दिया से नागपुर जाते समय हमारी कार को पुलिस के लोगों ने रोक लिया और सभी कागजात देखने के बाद भी नही छोडे तो अन्त में हार कर हमें दो सौ रूपया घूस देकर गांडी आगे ले जानी पडी। दूसरे दिन जब गांडी लौट रही थी तो उसी स्थान पर फिर गाडी रोक ली गई। उस सिपाही को बहुत समझाया गया कि कल ही उसके दूसरे साथी को दो सौ रूपया देकर गांडी गई है और सब कागज भी ठीक है, परन्तु नही माना और रात में चार घंटे तक गाडी रूकी रही। अन्त में उसने रियायत की और एक सौ रूपया घूस लेकर गांडी को जाने दिया। स्पष्ट रूप से सिद्ध हुआ कि घूस गलत कार्यो को कराने के लिये ही दी जाती हो यह बात नही है। घूस का पूरा मामला पावर से जुडा है।

जलगांव के आयोजक माधव राणें जी ने जैन सिंचाई के मालिक भवर लाल जी जैन से मुलाकात कराई। भवरलाल जी उस क्षेत्र के एक नामी उद्योगपति है। व तीन बार बाई पास सर्जरी करा चुके है। फिर भी हमें खेत में स्वयं श्रमपूर्ण देख रेख करते हुए मिले। उन्हाने खेत में ही मुझसे व्यापक चर्चा की और अपनी विचारधारा की एक पुस्तक हमारे विचारों से अधिकांश मेल खाती है। उन्होने जो नतीजे निकाले वे लगभग वैसे ही है। जैसे हम लोग निकाले है।

पटना में बहुत अच्छे अच्छे विद्वान कागज पेंसिल लेकर बैठे। कई रिटायर्ड आई ए.एस, आई पी.एस भी थें। वहां बहुत ही विद्वतापूर्ण प्रश्न भी हुए और टिप्पणियाँ भी हुई। कस्टोडियन और मैनेजर के अंतर को बहुत बारीकि से समझा गया। श्रम शोषण के चार सिद्धान्तों पर भी उत्सुकता से प्रश्न किये गये। पटना का कार्यक्रम मेरें लिये एक कठिन परीक्षा थी।

गोरखपुर में जन्माष्टमी की छुटटी होते हुए भी कार्यक्रम बार रूम में रखने में उपस्थिति कम थी। एक महिला अधिवक्ता ने महिला उत्पीडन का मुद्दा उठाया। मैनं महिला उत्पीडन के संबंध में उनकी सभी धारणाओं का एक एक करके खंडन किया तो वहां बैठे अन्य वकील आश्चर्य चकित रह गये। वहां के अधिवक्ता महिला उत्पीडन शब्द को महिलाओं का ब्रह्मास्त्र मानत थें जिसके समक्ष पुरूषो को झुकना आवश्यक हो जाता है। इस शब्द का पूरे समाज में इतना व्यापक प्रसार प्रचार हुआ कि वाचाल महिलाएँ कई बार इसका दुरूपयोग करती रहती है। मेरे उत्तर कें बाद पुरूषों को काफी बल मिला। गोरखपूर में अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष ही अध्यक्षता कर रहे थे। मेरें भाषण के बाद उन्होने बहुत अफसोस व्यक्त किया कि वे कार्यक्रम की गंभीरता को पहले नही समझे। उन्होने कई बार मन की पीडा का इजहार किया।

गोण्डा मे आयोजक साम्यवादी पार्टी के सक्रिय सदस्य थें। मुझे दिन में ही पता चला कि गोन्डा से संघ के प्रमुख लोग मुझे साम्यवादी विचारों का पोषक मानते है। और साम्यवादी मुझे संघ समर्थक मानते हे। ज्ञानतत्व पढते पढते कुछ ऐसी धारणा बनी है। भाषण के पूर्व ही एक तरफ आठ दस साम्यवादी गोलबन्द होकर बैठ गये और दूसरी ओर आठ दस संघ के प्रमुख लोग भी उसी तरह गोलबन्द बैठे। मेंरे भाषण के बाद संघ वालों ने प्रश्न किया कि कुकुरमुत्ते की तरह खुल रहे मदरसों के इस्लामिक जेहादीकरण को रोकने का क्या उपाय है? मैनें उन्हें समान नागरिक संहिता कहां तो वे खुश हो गये किन्तु जब मैने कहा कि समान नागरिक संहिता मं भारत एक सौ पांच करोड व्यक्तियों बीस करोड परिवारों और दस लाख गांवों का देश होगा, धर्मो या जातियों का संघ नही। जब मैने यह कहा कि हिन्दू राष्ट्र और समान नागरिक संहिता एक दूसरे क विरूद्ध धारणाएँ है। समान नागरिक संहिता के पक्षधरों को हिन्दू राष्ट्र के संबध में धारणा संशोधित करनी होगी तो साम्यवादियों ने मेरे कथन पर तालियाँ बजाकर प्रसन्नता व्यक्त की और संघ वाले नाराजगी भरी बहस करने लगे। थोडी देर में ही उन्होने हमारे कार्यक्रम का सामूहिक बहिष्कार कर दिया और बाहर जाकर आपस में चर्चा करने लगे। उसके बाद साम्यवादियों ने श्रम संबंधी प्रश्न किये। मैने श्रम बुद्धि और धन की अलग अलग व्याख्या करके यह प्रमाणित किया कि श्रम शोषण के चार सिद्धान्त 1.कृत्रिम उर्जा मूल्य नियंत्रण 2. शिक्षित बेरोजगारी दूर करने के प्रयास 3. न्यूनतम श्रम मूल्य वृद्धि की सरकारी घोषणाएँ और जातीय आरक्षण के मामले में साम्यवादी और पूँजीवादी एक साथ मिलकर मांग उठाते है मैने यह भी कहा कि बुद्धि के बढते मूल्य से श्रम मूल्य वृद्धि का प्रचार करना श्रम क साथ धोखा हैं। तब साम्यवादी नाराज हो गये उनके नेता ने टिप्पणी की कि कई दशक पूर्व राजनेताओं ने अपना एक पिठू साम्यवादियों की पीठ में छुरा घोपने के उददेश्य से विनोबा भावे के रूप में भेजा था, जिन्होने भूदान के नाम पर साम्यवाद को नुकसान पहुचाने का काम सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। अब धीरे–धीरे साम्यवादी क्रान्ति फिर मजबूत हो रही ह तो अब पुनः प्रतिक्रियावादी शक्तियों ने अहिंसा और श्रमशोषण को आधार बनाकर बजरंगलाल के रूप में नया दूत खडा कर दिया है। मैनें उन्हें समझाने का भी प्रयास किया और बिठाने का भी किन्तु वे न समझने को तैयार थे न बैठने को और नाराज होकर सबके सब बडबडाते हुए बैठक का वहिष्कार करके बाहर चले गयें। मुझे आश्चर्य हुआ कि मेरी बैठक का बहिष्कार करके बाहर जा चुके संघ कार्यकर्ता हमारी नोक झोक सुनकर अन्दर आ गये और कार्यक्रम के प्रति समर्पण और समर्थन व्यक्त करने लगे। मुझे पता चला कि गोन्डा के अखबारों ने उक्त घटना को उछाला और उनके इस व्यवहार की निन्दा भी की। मैं अब भी महसूस करता हूँ कि मेरा हिंसक क्रान्ति की अपेक्षा अहिसक क्रान्ति को अधिक सफल और उपयोगी कहना मेरी नजर में बिल्कुल ठीक था। गोन्डा के साम्यवादियों की इस दलील से बिल्कुल सहमत नही कि हिंसक या अहिंसक की चर्चा क्रान्ति को कमजोर कर देगी। मैं अब भी गोन्डा के वचन पर कायम हूँ कि यदि आज सुभाष चन्द्र बोस या भगतसिंह जीवित होते तो हिंसक क्रान्ति की अपेक्षा अहिंसक क्रान्ति का ही मार्ग पकडते क्योकि तानाशाही में ही हिंसक या अहिंसक पर चर्चा हा सकती है, लोकतंत्र में हिंसक क्रान्ति की कल्पना या तो निराश लोग किया करते है, या तानाशाह। हिंसक क्रान्ति के समर्थक लोकतांत्रिक हो ही नही सकते यह मेरी अब भी धारणा है।

सीतापुर उत्तर प्रदेश के आयोजक जीवेश साहनी जी ने बहुत परिश्रम किया और व्यवस्था भी बहुत अच्छी की उन्होने हमारी यात्रा को पभावशाली बनाने के लिये मिल जुलकर आधे घंटे का एक नाटक तैयार किया। नाटक करीब करीब इन्ही मुददों पर था और सीतापूर के व्यापारियों ने स्वयं ही बहुत तैयारी करके नाटक का मंचन किया। किन्तु मुझे ऐसा महूसस हुआ कि श्रोताओं का बडा वर्ग श्रोता न होकर दर्शक रूप में है, जो भाषण के जल्दो समापन की प्रतिक्षा कर रहा हैं। मैने अपना भाषण दस मिनट कम करके ही समाप्त कर दिया।

वहां न कोई प्रश्नोत्तर हो पाया न ही कोई टीम बन सकी नाटक प्रभावशाली था । इसमें दो राय नही किन्तु यदि समय विभाजन का पूर्व ज्ञान होता तो उसी तरह भाषण संक्षिप्त करके प्रश्नोत्तर तथा अन्य संगठन संबंधी चर्चाएँ पूरी हो सकती थी।

बरेली के कार्यक्रम की अक्ष्यक्षता वहां के सांसद तथा पूर्ण केन्दीय मंत्री संतोष गंगवार जी ने की। उन्होने काफी ध्यान पूर्वक पुरा भाषण भी सुना और प्रश्नोत्तर भी। उन्होने हमारी पूरी योजना के प्रति अपना भरपूर समर्थन व्यक्त किया। उन्हाने साफ साफ कहां कि भाषण में व्यक्त कई बातें उनकें राजनैतिक अनुभव में विस्तार हेतु उपयोगी है। इसी तरह अम्बिकापुर छत्तीसगढ की मीटिंग की अध्यक्षता भी वहां के सांसद नन्द कुमार साय जी ने की। वे भी पूरे समय तक बैठे और उन्हाने भी वैसे ही विचार व्यक्त कियें जैसे गंगवार जी के थें।

गढवा झारखंड की बैठक के आयोजक झारखंड राष्ट्रीय जनता दल के विधायक दल के नेता गिरिनाथ सिंह जी थें। आयोजन के पांच दिन पूर्व से ही झारखंड में सत्ता परिर्वतन का खेल चरम पर पहुंच गया। फोन पर उन्होने स्थिति बताई और कार्यक्रम की तिथि बदलने का सूझाव दिया। जिसे स्वीकार करके हमने कार्यक्रम स्थगित कर दिया। अब नई सरकार बन चुकी है। भविष्य में कभी फिर गढवा या रांची का कार्यक्रम बनेगा तब देखा जायगा।

उत्तरांचल कें देहरादून में आचार्यकुल का वार्षिक सम्मेलन हो रहा था। देश भर के आचार्यकुल के प्रमुख लोग उपस्थित थे। उसी बैठक में एक सत्र का विषय व्यवस्था परिवर्तन रखा गया। जिसमें मुख्य वक्ता मैं था। मेरे भाषण के बाद खुला प्रश्नोत्तर भी देर तक चला। आचार्यकुल से पदाधिकारीयों ने इस योजना के प्रति पूर्ण समर्थन की मंच से घोषण भी की ।

इन्दौर में जसवन्तराय जी के प्रयत्नों से एक अतिरिक्त आयोजन कस्तुरबा ग्राम की छात्राओं और बहनों की बीच हुआ। करीब दो सौ की उपस्थिति थी किन्तु सबने पूरा विषय बहुत शान्त और अनुशाहित होकर सुना। प्रश्नोत्तर भी हुआ। शाम होने करण प्रश्नोत्तर को रोकना पडा अन्यथा छात्राएँ तो बहुत प्रभावित थी।

इन्दौर की सभा में प्रसिद्ध गांधीवादी नरेन्द्र जी दुबे भी उपस्थित थे। उन्हें राजनीति के विरूद्ध भाषण से भी कष्ट हो रहा था और ग्राम सभाओं को व्यापक अधिकार देने के भी विरूद्ध थे। मैं दो वर्ष पूर्व रायपुर में दुबे जी से एक घंटा मंच पर ही चर्चा कर चुका था। न मैं उन्हे यह कहकर रोका कि मुद्दे पर रायपुर में व्यापक चर्चा हुई ह। पहले दूसरों के प्रश्न आने दे तब बाद में आपसे चर्चा हो जायगी। तब उन्होने अपना भाषण बन्द किया।

वाराणसी के अधिवक्ता कक्ष में करीब डेढ सौ अधिवक्ता पूरी तन्मयता से भाषण सुन रहे थें। अनेक वरिष्ठ अधिवक्ता भी उपस्थित थें। अधिवक्ताओं ने काफी गंभीर प्रश्न कियें संविधान और कानून की परिभाषा न्यायिक सक्रियता की लाभ–हानि जातीय आरक्षण का श्रम शोषण में योगदान शिक्षा स्वदेशी आदि पर कई प्रश्न हुई। स्वदेशी के नाम पर किसी साबुन और किसी टूथपेस्ट की वकालत करते हैं। तो हम स्वदेशी क नाम पर भारत के पूँजीपतियों की दलाली के आरोप से बच नही सकतें फिर एक बात और है कि स्वदेशी संविधान और स्वदेशी अर्थनीति तो भारत की सभी आर्थिक सामाजिक समस्याओं का समाधान हो सकता है। जिसमें स्वदेशी शीतलपेय भी शामिल है और स्वदेशी साबुन भी किन्तु स्वदेशी साबुन और स्वदेशी शीतलपेय के आंदोलन की सफलता से न स्वदेशी समाज व्यवस्था आ सकती है न स्वदेशी अर्थव्यवस्था। यह बात अधिवक्ताओं ने गंभीरता से सुनी। एक बहुत वरिष्ठ और सम्मानित अधिवक्ता ने लम्बा भाषण देकर अमेरिका की आलोचना कीं। मैने समझाया कि आपका कोई प्रश्न न होकर विचार है जो भिन्न भी हो सकता है। मैं इसमें क्या कह सकता हूँ? हो सकता है कि मैं गलत होउ या यह हो सकता है कि आप गलत हों। इस सबंध में बहस न करके प्रश्न करे तो अच्छा होगा। उन्होने फिर अपनी बात दुहराई तो मैने कहा कि भारत में वे लोग बुश और मुशर्रफ को गाली देने या पुतला जलाने में आगे आगे दिखते है। जो वाराणसी के नामी अपराधी के विरोध से डरते है। भारत में यह फैशन हो गया ह कि स्वयं को सुरक्षित रखते हुए दूर की हस्तियों की आलोचना करे। मेंरे उत्तर से जब वे फिर तीसरी बार बोलने लगे तब पंकज जी ने माइक संभालकर उन्ही की भाषा में उत्तर दिया तब वे चुप हुए। वाराणसी में संस्कृति विश्वविद्यालय में भी एक भाषण हुआ। भाषण के पूर्व मैने वहाँ के पूर्व विद्यार्थी रहे चन्द्रशेखर आजाद की मूर्ति को माल्यार्पण किया। उसके बाद एक स्थानीय कवि की एक पूरी कविता सुनी गई जिसके बोल थे ''गोरे गोरे नेता लोग, काले काले धन्धे''। कविता बहुत अच्छी थी। उसके बाद मेरा भाषण हुआ। दुर्भाग्य से उस दिन छुटटी हो जाने से उपस्थिति कम हो पाई।

जयपुर में वहां के प्रदेश पंचायत सचिव जी से हमारी चर्चा हुई वर्तमान पंचायत कानून क संबंध में मैने उन्हें बताया कि वर्तमान पंचायत ऐक्ट ग्राम पंचायतों को कार्यपालिका अधिकार तो देता है पर विधायी अधिकार नहीं देता एक ग्राम सभा अपने गांव में पद्रह वर्ष की उम तक को ग्राम सभा में शामिल करने का कानून बना दे तो उसे अधिकार नही जबकि विधान सभा या संसद को ऐसा अधिकार नही जबकि विधान सभा या संसद को ऐसा अधिकार है। एक ग्राम सभा अपनी गांव की स्कुल के शिक्षकों के

उतना वेतन देने हेतु वाध्य है जो शासन तय करे। ग्राम सभा तय नही कर सकती। ऐसे और भी उदाहरण है सचिव जी न हमारी बात को गंभीरता से सुना समझाा और इस विषय पर व्यापक चर्चा की।

दो माह की यात्रा में हम जहा भी गये उनमें अनेक स्थान भी नये थे और आयोजक भी। कई आयोजक तो सिर्फ सम्बन्धों के ही आधार पर आयोजन करा रहे थ। विषय की गंभीरता का तो उन्ह बाद में अहसास हुआ। हमें पूरे देश में व्यापक जन समर्थन भी मिला और मडिया के माध्यम स व्यापक प्रचार प्रसार भी। निरस्त कायक्रमों की सूची कम होती तो हमें और अधिक लाभ तो किन्तु जितना हुआ वह भी काई कम नही कहा जा सकता मैं और पंकज जी दोनो तेरह हजार कि.मी.की यात्रा और लम्बे लम्बे भाषणों के बाद भी पूर्ण स्वस्थ रहे गांडी भी कही खराब नही हुई एक भी कार्यक्रम में हम विलम्ब से नही पहुचें तथा एक भी जगह कोई अन्य प्राकृतिक व्यवघान नही आया यह संतोष की बात है। दो माह के कार्यक्रम में कायालय की ओर से कुल पैंतीस हजार रूपया खर्च हुआ किन्तु हम पूरी तरह यात्रा से संतुष्ट है। और भविष्य में ऐसी व्यापक यात्रा को व्यवस्था परिवर्तन अभियान के लिये सशक्त माध्यम मान रहे है। भविष्य में ऐसी और योजना बनेगी ऐसी आशा है।

दो अक्टूबर को राजघाट गांधी समाधि पर यात्रा का समापन हुआ। दिल्ली के बाहर से करीब पचास और दिल्ली के गरीब छ सौ लोग शामिल हुए। लाउडस्पीकर खराब जो जाने तथा भीड अधिक हो जाने के कारण कूछ असुविधा हुई। महावीर सिंह जी ने अध्यक्षता की। मैने (बजरंगलाल) श्रम शोषण विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया जो ज्ञानतत्व के अंक एक सौ बाइस के शीर्ष लेख के रूप में जायगा। भाषण के साथ ही श्रम शोषण मुक्ति अभियान विधिवत प्रारंभ होने की घोषणा की गई। इस अभियान के प्रमुख का दायित्व दिल्ली के प्रमुख गांधीवादी श्री ओमप्रकाश जी दुबे को सांपा गया। आचार्य पंकज जी ने व्यवस्था परिवर्तन के चार सूत्रों पर प्रकाश डाला। अध्यक्षीय भाषण के बाद यात्रा का समापन हुआ और सबने गांधी समाधि जाकर राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि भेंट की।

तीन बजे से धर्मशाला में बैठक प्रारंभ हुई। जनवरी में हुई बैठक में पारित प्रस्तावों पर एक–एक करके चर्चा हुई।प्रस्ताव थे—

1. देश की वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था के विरूद्ध असंतोष जागरण पर हम विशेष ध्यान दें समाधान की दिशा में किसी सक्रियता से यह मंच निर्लिप्त रहें। असंतोष जागरण के लिए वर्तमान व्यवस्था के गलत कार्यो के विरोध तक ही सीमित रहा जाय। विरोध के नाम पर अनावश्यक मुद्दे उठाने से बचे।
2. यह मंच शासन के अधिकारों का विराध करेगा, आदेशों के विरोध तक सीमित नही रहेगा।
3. वर्तमान अव्यवस्था के कारणों में चरित्र की अपेक्षा नीतियों की चर्चा अधिक होगी। अपने कार्यकर्ताओं के आचारण के संबंध में भी कोई संहिता नही बनेगी जब तक कोई बहुत विशेष बात न हो।
4. स्वराज्य और सुराज्य के बीच ध्रुवीकरण बिल्कुल स्पष्ट और सीधा हो जो लोग सत्ता क माध्यम से विकास की बात करते है, उन्हे विरोधी माना जायेगा क्योकि जब अपराध अनियंत्रित हा तो विकास और चरित्र निर्माण शासन का काम नहीं, समाज का काम होता है।
5. समानता की नई परिभाषा प्रचारित करे ''सक्षमों को समान स्वतंत्रता और अक्षमों को समान सुविधा'' । सक्षम और अक्षम के बीच शासन अपनी क्षमता क अनुसार सीमा रेखा बना सकता है।
6. आंदोलन पूरी तरह अहिसक और अधिकतम संवैधानिक तरीके से होगा।
7. वर्तमान समय में हमारा आंदोलन पूरी तरह जन जागृति तक केन्द्रित होगा। टकराव की स्थिति को हर हालत में टाला जायेगा।
8. संविधान संशोधन के चार मुद्दे में से प्रथम प्रतिनिधि वापसी और द्वितीय परिवार गांव जिले के अधिकारों को संविधान में शामिल करने को अन्य 2 मुद्दो ''नीति निर्देशक सिद्धान्त वाध्यकारी हाने और विदेशों से समझौतों की संसदीय स्वीकृति'' से अधिक महत्व दिया जायेगा।
9. व्यवस्था परिवर्तन अभियान में भविष्य में संगठनों की अपेक्षा व्यक्तियों को शामिल करने का अधिक प्रयास किया जायेगा। संगठन को जोडने के पूर्व गंभीर विचार मंथन आवश्यक है।
10. मुख्य वचन ''राजनीति से दूर रहकर राजनीति पर नियंत्रण का अदभूत प्रयास'' लिखा जाय। इस पर चर्चा में कई सुझाव आये कुछ लोग प्रारंभ में दलगत शब्द जोडने के पक्ष में रहे निर्णय अधुरा रहा, आगे फैसला होने तक स्थानीय समितियां दोनो में से कोई भी वाक्य लिख सकती है।
11. व्यवस्था परिवर्तन अभियान क बैनर तले 4 मुददों पर जनमत जागरण के अतिरिक्त अन्य किन्ही विषयों पर सेवा कार्य या आंदोलन को प्राथमिकता नही दी जायेगी किन्तु किसी अन्य बैनर तले कोई भी अन्य विषय उठाने में मंच के कार्यकाताओं को

कोई आपत्ति नही है। सभी प्रस्तावों पर सबकी सहमति बनी। इसके बाद नये प्रस्तावों पर चर्चा शुरू हुई पहले प्रस्ताव के रूप में मैने घोषित किया कि मैं भविष्य में किसी भी संगठन का सदस्य या पदाधिकारी नही रहना चाहता मैं अब तक पिछले एक वर्ष स व्यवस्था परिवर्तन अभियान का संयोजक हूँ। जो अभियान के साथ साथ एक संगठन का रूप भी ग्रहण कर चुका है। मैं अब संयोजक का पद छोडकर एक नई व्यवस्था घोषित करना चाहता हूँ। अपने कथन के पक्ष में मैनें निम्नलिखित तर्क दिये।

1. संगठन के कार्य में लग जाने से चिन्तन कार्य प्रभावित होता है।
2. जब भी मैं कोई बात स्पष्ट रूप से लिखता हूं तो कोई ना कोई संगठन मुँह फुला लेता है। व्यवस्था परिवर्तन अभियान के हित में मुझे लीपा पोती करनी पडती है।
3. मैने छब्बीस अक्टूबर से वानप्रस्थ स्वीकार करना तय किया है। इस हिसाब से भी मुझे पद मुक्ति की घोषणा करनी ही है।
4. व्यवस्था परिवर्तन अभियान का संयोजक होने के कारण मैं लोक स्वराज्य मंच के साथ न्याय नही कर पाता।
5. मरे व्यक्तिगत जीवन में व्यवहर कुशलता का अभाव है। व्यवहार कुशलता संगठन की सफलता क लिये एक आवश्यक उपयोगिता मानी जाती है।
6. पिछले एक वर्ष में व्यवस्था परिवर्तन अभियान में ऐसे कई मजबूत साथी जुड गये है जो कार्य को आगे बढाने में सक्षम है। लम्बी चर्चा के बीच मैने यह आश्वासन दिया कि मैं आप सबके साथ हूँ। पदमुक्ति का अर्थ अभियान मुक्ति नही है। यदि कभी संगठन ने आवश्यकता महसूस की मैं आपके निष्कर्ष के साथ रहूगाँ इस आश्वासन के बाद यह चर्चा समाप्त हो गई। मैं ज्ञान यज्ञ मण्डल का प्रमुख रहूंगा। ज्ञान यज्ञ मण्डल के तीन कार्य होगे। ——

1. देश के पंद्रह सौ विचारकों का नाम चयन करके एक लोक संविधान सभा का गठन और उसका एक माह का दिल्ली में सम्मेलन।
2. व्यवस्था परिर्वतन आंदोलन में सक्रिय संस्थाओं, व्यवस्था परिवर्तन अभियान, लोक स्वराज्य मंच आदि की सहायता और मार्ग दर्शन, किन्तु किसी भी रूप में हस्तक्षेप नही।
3. श्रम शोषण मुक्ति अभियान की सहायता।

ज्ञानयज्ञ मण्डल की एक सलाहकार समिति होगी जिसके एक सौ सदस्य होगे। तात्कालिक चर्चा हेतु पंद्रह तक लोगों की एक समिति होगी। वर्तमान में इसमें निम्नांकित का चयन किया गया है——

1. श्री आर्य भूषण भारद्वाज जी
2. श्री आचार्य पंकज जी
3. श्री ओमप्रकाश दुबे जी
4. श्री अशोक गाडिया जी
5. श्री अशोक भाई जी आगरा
6. श्री महाबीर सिंह जी
7. श्री राकेश रफीक जी
8. श्री अशोक त्रिपाठी जी वाराणसी
9. श्री रामकृष्ण पौराणिक जी,उज्जैन
10. श्री कृष्ण लाल रूंगठा जी धनवाद
11. श्री अरूण चौबे जी,वाराणसी,
12. श्री हीरालाल शर्मा जी बंगलौर
13. श्री घनश्याम गर्ग जी ,नोएडा
14. श्री श्याम सुन्दर जी तिवाडी, शोलापुर
15. श्री रमेश जी राघव, दिल्ली।

सलाहकार समिति और पंन्द्रह कि समिति में प्रत्येक छ माह में एक पंचमाश नये सदस्यों को आवश्यक रूप से शामिल करके पुराने सदस्यों के नाम कम किये जायेगे।

प्रत्येक माह के अंतिम रविवार को ज्ञान यज्ञ कार्यलय में एक सम्मेलन होगा। इस सम्मेलन में दोपहर दो बजे से आधे घंट का यज्ञ होगा। यज्ञ पश्चात पूर्व निश्चित विषय पर मेरा एक व्याख्यान और दो घंटे का उक्त विषय पर खुला विचार मंथन होगा ज्ञान यज्ञ मण्डल सलाहकार समिति तथा अन्य संगठनों की बैठके भी प्रातः दस बजे से या शाम पांच बजे पश्चात हो सकती है। पहला ज्ञान यज्ञ छब्बीस नवम्बर रविवार को सम्पन्न होगा।

ज्ञान यज्ञ मण्डल के कार्यालय से ही अन्य सभी संगठनों का कार्यालयीन कार्य वर्तमान समय में जारी रहेगा।

ज्ञान यज्ञ मण्डल की खर्च के व्यवस्था संरक्षक सदस्य करेगे। संरक्षक सदस्य हो उसका बजट बनायेगें, हिसाब रखेगें, तथा हिसाब देख सकेगें। कोई अन्य इस मामले में काई हस्तक्षेप नही कर सकेगा। आजीवन संरक्षक सदस्य बनाये जायगें जो चार हजार रूपये एक बार या एक हजार रूपया वार्षिक पांच वर्ष तक दान देवे। चार हजार से अधिक देने वालों की इच्छानुसार उनका नाम लिखकर उतनो कीमत का साहित्य निशुल्क बंटवाया जा सकता है। वर्तमान में अशोक गाडिया जी संरक्षक सभा के अध्यक्ष है। अशोक जी आजीवन सदस्य है, अन्य सत्ताइस सदस्य और है।

1. श्री अशोक गाडिया
2. श्री पन्नालाल अग्रवाल
3. श्री हुकुमचन्द्र अग्रवाल
4. श्रीमति आरती चकवर्ती
5. श्री डॉ0 मदन मोहन चोपडा
6. श्री कृष्ण कुमार खन्ना
7. श्री कुष्ण लाल रूंगटा
8. श्रीमति राधा मेहता
9. डा0 गीतांजलि शर्मा
10. श्री जितेन्द्र कुमार
11. श्री शंकर लाल शर्मा
12. श्री सुरेश चन्द्र दुबे
13. श्री विजय कुमार अग्रवाल
14. श्री नरेन्द्र प्रताप सिंह
15. श्री ब्र.राज सिंह आर्य
16. श्री महावीर सिंह
17. श्री रणवीर शर्मा
18. श्री रघुनाथ प्रसाद गुप्ता
19. श्री पंचानन पाठक
20. डॉ0 ए,के,द्विवेदी
21. श्री घनश्याम माहेश्वरी,
22. श्री चन्द्रिका चौरसिया
23. श्री माधव खुशहाल राणे
24. श्री जसवन्त राय
25. श्री नागेन्द्र प्रसाद
26. श्री कैलाश चौरसिया
27. श्री अमरसिंह आर्य

इनमें से श्री कृष्ण कुमार खन्ना, आगरा, श्री कुष्ण लाल रूंगढा धनबाद, श्री माधव खुशहाल राणे, जलगांव, का दो–दो हजार और शेष का एक एक हजार रूपया प्राप्त हुआ है। एक दो सदस्यों ने शेष तीन हजार देने की घोषणा भी को। तय किया गया कि सभी संगठनों के लोग अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य बनाने का प्रयास करेगे। वर्ष दो हजार सात के अंत तक ऐसे संरक्षक सदस्यों की संख्या एक सौ एक तक का लक्ष्य रखा जाय।

ज्ञान तत्व पाक्षिक इस आंदोलन की रीढ मानी गई है। ज्ञान तत्व का आजीवन सदस्यता शुल्क पांच सौ रूपये तथा वार्षिक पचास रूपये है। इस पाक्षिक के पूर्वार्ध के विचार पूरी तरह मेरे व्यक्तिगत है और उत्तरार्ध के विचार कार्यालय के। सभी संगठनों के लोग इस विचार मंथन में सहयोग हेतु मेर विचारों से खुलकर असहमति व्यक्त करें आपकी असहमति मेरे विचार मंथन में सहयोगी होगी। ज्ञान तत्व की उपयोगिता सभी स्वीकार करते है किन्तु ग्राहक विस्तार के मामले में चार–पांच लोग ही अधिक सक्रिय है। अन्य लोग को भी ज्ञान तत्व के अधिकाधिक ग्राहक बनान चहिये। ज्ञानतत्व की रसीद बुंक दस–दस की है। आप भी रसीद बुक मंगाकर बना सकते है।

मरी अगली यात्रा मार्च अप्रैल की एक माह की है। यदि स्थान अधिक होगे तो बढाया भी जा सकता है। जो लोग मीटिग रखना चाहे वे शीघ्र सुचित कर दे तो व्यवस्था में सुविधा रहेगी।

मेरे भाषण की व्यवस्था आप स्वयं भी कर सकते है। और किसी कालेज बार रूम व्यापार संघ या अन्य संगठन के माध्यम से कर सकते है किन्तु मेंरे भाषण में अन्य लोगों के साथ–साथ संघ, सर्वोदय, आर्यसमाज, गायत्री परिवार, श्रमिक संगठन, तथा व्यापार संघ के पदाधिकारियों को शामिल करने का विशेष प्रयत्न करना चाहियं। यदि कठिनाई न हो तो मेरे आवागमन व्यय के रूप मे अधिकतम पांच सौ रूपये देने की व्यवस्था की जा सकती है।

3 अक्टूबर को प्रात नौ बजे बैठक फिर शुरू हुई अरूण जी ने ज्ञानतत्व एक सौ बीस का उदाहरण देकर कहा कि आपके लिखने से आपके उपर संघ समर्थक होने का आरोप लगता है। यदि विवादास्पद मुद्दों से बचा जाये तो अच्छा होगा। किसी संगठन का सीधा नाम लेकर की गई टिप्पणी मित्र को भी शत्रु बना देती है। मेरी जानकारी में आपके साथ ऐसा हो रहा है जिसका खामियाजा व्यवस्था परिवर्तन अभियान को भी उठाना पडता है। मैने ज्ञान तत्व अंक एक सौ बीस के वे पृष्ठ पढकर सुनाये जो सर्वोदय के विरूद्ध जाते थे। मैने ज्ञान तत्व अंक अठासी पृष्ठ पैंतीस अंक छयान्नवे का शीर्ष लेख और अंक एक सौ तीन पृष्ठ दस भी पूरा पढकर सुनाया जिसमें संघ की अत्यन्त कटु आलोचना की गइ है। मैने स्पष्ट किया कि मेरे मन में किसी संगठन के प्रति राग द्वेष नही है। इतना अवश्य है कि विभिन्न संगठनों ने अपनी अपनी मजबूत दीवारो खडी करके समाज में असत्य का बहुत सारा कूडा कर्कट इकटठा कर दिया है। भारत में अभी ऐसे संगठनों की मजबुत दीवारों का कमजोर करने की आवश्यकता है। अभी ऐसे विचारक का अभाव ही है जो ऐसे संगठनों का आक्रोश झेल सके। मैने यह बीडा उठाया है कि समाज के भी वर्गो के अच्छे लोगों को एक साथ जोडने का प्रयत्न करूं। इस कार्य के लिये अपने संगठन के पति अन्धश्रद्धा और दूसरे के प्रति घृणा पर चोट करनी होगी। इस खतरनाक प्रयोग के परिणाम स्वरूप मुझे अनेक बार सर्वोदय संघ इस्लाम और वामपंथी मित्रों को आक्रोश भी झेलना पडता है। किन्तु कुल मिलाकर हमारे अभियान को भले ही कुछ नुकसान हुआ हो किन्तु समाज को बहुत लाभ हुआ भविष्य में मैं संगठनों से पूरी तरह अलग हो चूका हूँ। अब तो कोई नुकसान इसलिये नही होगा क्योकि आप उक्त टिप्पणी से स्वयं को अलग कर सकते है। मेरी तो यही इच्छा है कि ये संगठन या तो विचार मंथन में भाग लें या असत्य का प्रचार बन्द करे।

इसके बाद व्यवस्था परिवर्तन अभियान और लोक स्वराज्य मंच की चर्चा हुई दोनो ही संगठनों की इच्छा थी कि मैं अपने प्रभाव का उपयोग करके दूसरे संगठन का उसके संगठन में विलय करा दूं। दोनों संगठन अपनी अपनी जिद पर अडे थे मुझे दो संगठन चलाने में सामान्य से ज्यादा नूकसान नही दिखता। तय हुआ कि दोनो संगठन स्वतंत्र रूप से व्यवस्था परिर्वतन आंदोलन खडा करे। ज्ञान यज्ञ मण्डल दोनो का सहयोग करेगा।

व्यवस्था परिवर्तन अभियान का एक संयोजक मंडल होगा जिसमें पंद्रह संदस्य होगे। संयोजक मंडल का एक महा सचिव होगा। जो संयोजक मंडल के निदेशानुसार काम करेगा। अभी तात्कालिक व्यवस्था के अन्तर्गत आचार्य पंकज जी महासचित का देखेगें। उनकी सलाह से व्यवस्था परिवर्तन अभियान के एक संयोजक मंडल की घोषणा की गई जिसमें ––

1. श्री राजनाथ पांडे
2. श्री अरूण चौबे
3. श्री रामकृष्ण पौराणिक
4. श्री सुधेन्दु जी पटेल
5. श्री कृष्णलाल रूंगढा
6. श्री राधेश्याम सिंह
7. श्री चन्द्रिका चौरसिया
8. श्री अशोक भाई
9. श्री सुनील एक्का
10. श्री सुभाष प्रसाद
11. श्री हृदयेश मिश्र
12. श्री हीरालाल शर्मा ।

अन्य तीन नाम अनुपस्थित सदस्यों से चर्चा के बाद जोडे जायेगे। संयोजक मंडल यथा शीघ्र एक संविधान का प्रारूप बनायेगा। जिसका अन्तिम निर्णय ज्ञान यज्ञ मंडल की सलाहकार समिति करेगी तथा उसी संविधान अनुसार व्यवस्था परिवर्तन अभियान संचालित होगा। लोक स्वराज्य मंच को भी ऐसी ही सलाह दी गई। लोक स्वराज्य मंच के बैठक में उपस्थित पदाधिकारियों श्री भगवान लाल वंशीवाल, श्री बहादुर सिंह यादव, श्री अर्पित अनाम, श्री अमरसिंह आर्य, डॉ.एस पी.गहलोत से निवेदन किया गया कि वे श्री आर्यभूषण भारद्वाज जो वर्तमान में लोक स्वराज्य मंच के अध्यक्ष है। की सलाह से आगे की योजना घोषित करें इसी तरह श्रम शोषण मुक्ति अभियान के अध्यक्ष, श्री दुबे जी से भी निवेदन किया गया। दुबे जी न श्री दीनानाथ बर्नवाल को दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष घोषित किया व्यवस्था परिवर्तन अभियान के वर्तमान पदाधिकारी अब्दुल भाई तथा एम एच पाटिल जी के अनुपस्थित रहने के करण उनसे पूछकर उनके नाम जोडे जा सकते है।

तीन तारीख को अन्तिम सत्र में निम्न चर्चाएँ सम्पन्न हुई ——

1. पूरा पूरा प्रयत्न किया जाए कि आंदोलन दो हजार नौ तक परिणाम मूलक आंदोलन का स्वरूप ग्रहण कर ले।
2. व्यवस्था परिवर्तन का एक मात्र नारा –''सब सुधरेगा तीन सुधारे नेता कर कानून हमार'' का बहुत व्यापक प्रचार प्रसार हो। जगह जगह पर स्टीकर खरीदकर चिपकाये जायें। पच्चीस रूपया प्रति सैकडा की दर से केन्द्रीय कार्यालय कुछ बडे स्टीकर छपवा कर बडी मात्रा में सशुल्क देने की व्यवस्था करे जो जगह जगह चिपकाये जा सके। ट्रेन बस या घरों में भी चिपकायें जावें। जिला प्रमुख अपने अपने जिले में नारा प्रचारित करने के लियें अन्य उपाय भी करें ऐसी ही व्यवस्था श्रम शोषण अभियान के नारे "कृत्रिम उर्जा सस्ती हो, यह बहुत बडा षडयंत्र है । श्रम का शोषण करने का यह पूँजीवादी मंत्र है" भी की जावे।
3. व्यवस्था परिर्वतन अभियान ने जून तक तीन तीन दिन के चार शिविर रखने की योजना घोषित की जो एक राजस्थान एक कर्नाटक एक उत्तर प्रदेश तथा एक बिहार के राजगीर में होगा। राजस्थान की व्यवस्था श्री सुधेन्दु पटेल, कार्नाटक की श्री हीरालाल शर्मा, राजगीर की श्री चन्द्रेशवर प्रसाद, तथा उत्तर प्रदेश की पंकज जी, देखेगे। अन्य दो तोन शिविर जून बाद किये जायंगे।
4. हस्ताक्षर अभियान की अन्तिम अवधि तीस जनवरी है। तब तक जितने हस्ताक्षर इकट्ठे होगे वे समर्पित कर दिये जायगे। उपस्थित लोगों में से तीन सौ गाजियाबाद एक हजार जे.पी.गुप्त छत्तरपूर, एक हजार हीरालाल जी कर्नाटक, एक हजार महावीर सिंह जी, एक हजार गोपालगंज, एक हजार बहादुर सिंह जी , उपांच सौ पौराणिक जी, एक हजार महेश जाखड जी, एक हजार सूरी जी गायत्री परिवार दिल्ली तथा दस हजार लोक स्वराज्य मंच ने जिम्मा लिया। अन्य लोग भी यथा शक्ति करायेगे ही।
5. साहित्य विक्रो का पूरा हिसाब कार्यालय सचिव के जिम्मे रखा जाय। निशुल्क वितरण योग्य साहित्य को छोडकर शेष साहित्य बेचने की कला विकसित करे। साहित्य पर लागत मूल्य से करीब तीस प्रतिशत अधिक मूल्य अंकित हो यह तीस प्रतिशत और दस प्रतिशत अपनी ओर से मिलाकर चालीस प्रतिशत मूल्य कम करके ही केन्दीय कार्यालय साहित्य विक्रय करे। स्थानी इकाइयाँ स्वतंत्र है कि वे कैसे बचती है।
6. सभी संगठन अपना अपना बजट बनायेंगे और उसकी व्यवस्था करेंगे। ज्ञान यज्ञ मण्डल संरक्षक सदस्यता से ही अपना खर्च पूरा करेगा। सभी संगठनों का कर्तव्य है कि वे अपने अपने खर्च की व्यवस्था के साथ साथ ज्ञान यज्ञ मण्डल के कुछ संरक्षक सदस्य भी बनाने का प्रयत्न करे।

इसके बाद समापन भाषण हुआ। मैने समापन भाषण में समझाया कि ——

1. भारत में हम लोगों को छोडकर काई एक भी ऐसा संगठन नही है जिसके पास व्यवस्था की कोई स्पष्ट परिभाषा हो या व्यवस्था परिवर्तन का कोई स्पष्ट मार्ग हो। अपने सभी कार्यकर्ता यह बात मजबूती से रखें क्योकि यह बात दंभोत्ति न होकर यथार्थ है।
2. सभी संगठनों में कुछ धूर्त भी शामिल है और कुछ शरीफ भी। हम किसी संगठन का न विरोध करें न नफरत करें किन्तुं हम सभी संगठनां के अच्छे कार्यो की प्रशंसा और गलत कार्यो की आलोचना अवश्य करना सीखे इससे सभी संगठनों के बीच सही और गलत क बीच एक बहस शुरू होगी। ऐसी बहस समाज क लिये बहुत हितकर होगी।
3. प्रत्येक कार्यकर्ता का एक एक परिक्षेत्र का दायित्व सौंपने का प्रयोग सफल नही रहा है। प्रत्येक कार्यकर्ता से अपेक्षा है कि वह पहले अपन जिले को सक्रिय करे। इसके लिये——'

   (क) जिले के सभी विकासखण्डों में विकासखण्ड प्रमुख का चयन।

   (ख) अपने जिले में दो सौ संकल्प पत्र पंद्रह जनवरी तक पूरे करना।

   (ग) अपने जिले में अप्रैल की यात्रा में मीटिंग कराने का आमंत्रण भेजना।

   (घ) ज्ञान तत्व के ग्राहक बनाना।

   (च) साहित्य विक्रय का प्रयास

   (छ)अपने जिले में एक दो संरक्षक सदस्य बनाने का प्रयास।

   (ज)सब सुधरेगे या कृत्रिम उर्जा के अधिकाधिक स्टीकर चिपकाने तथा दीवार लेखन के प्रयास।

(झ) हमारे सम्पूर्ण कार्य को एक लाइन में हो तो निम्नांकित का प्रयोग करना "परिवार और समाज" से राज्य के सम्बन्धों की पुनव्याख्या के प्रयत्न।

(ट) ज्ञान तत्व के पुराने अंक मंगाकर पढने या पुन पढने का प्रयत्न करना।

कुछ अन्य कार्यकर्ताओं ने भी अपने अपने विचारों रखे और आचार्य पंकज जी के धन्यवाद ज्ञापन के बाद बैठक समाप्त हुई।

श्रम शोषण मुक्ति अभियान क्यो ?

महावीर सिंह जी (नोएडा)
सदस्य सलाहकार समिति
ज्ञान यज्ञ मण्डल गौतमबुद्ध नगर उ,प्र,

महात्मा गांधी की पुण्यतिथी 2 अक्टूबर 06 को श्री ओम प्रकाश दुबे की अध्यक्षता में श्रम शोषण मुक्ति अभियान का प्रारंभ उनकी राजघाट समाधि से किया गया तथा आयोजित रैली में अधिकांश श्रम जीवियों ने भाग लिया। यह आंदोलन महत्वपूर्ण होगा क्योंकि आज की सब समस्यायें श्रम शोषण पर आधारित है। इसके पीछे तत्व की यह बात है कि अर्थ (पैसे) ने श्रम का सदैव शोषण किया है क्योकि समाज न श्रम को समुचित महत्व न देकर अर्थ को अधिक महत्व प्रदान किया परन्तु फिर भी भारत में श्रम–प्रतिष्ठा बनी रही जिसका ग्रामीण क्षेत्र व कृषि कार्य में आज भी कुछ प्रभाव अवशेष रूप में बना हुआ है।

अभी तक देश में हमारी कृषि व्यवस्था श्रमधारित बनी रही कृषि कार्य जीवन यापन का धंधा रहा है तथ गांव क किसान मजदुर कारीगर अभी तक श्रमधारित जीवन व्यतीत कर रहे है परन्तु अब कृषि कार्य को भी लाभकारी व्यवसाय बनाने हेतु सरकार नीतिगत परिवर्तन कर रही है जिससे पूँजीपति वर्ग एवं बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ पैसे के बल पर कृषि आश्रित किसान का मजदूर बेरोजगार बनेगें तथा वर्तमान अर्थनीति के कारण उनका जीवन प्राय समाप्त हो जायगा।

गॉधी जी ने कहा था कि एक मजदूर व बुद्धिजीवी की आवश्यकतायें समान है अत उनकी आय और समान होनी चाहिये। उन्होने यह भी कहा कि जहां बुद्धिजीवी को कम से कम 3–4 घंटे श्रम करना चाहिये वहा पर श्रमजीवी को 3–4 घंटे ज्ञान–अर्जन का अवसर प्रदान करना होगा जिसको उन्होने सामाजिक न्याय की संज्ञा दी। वास्तव में आज श्रम व बुद्धि का संघर्ष चल रहा है जो तभी समाप्त हो सकेगा, जब दोनों का समान महत्व दिया जायेगा तथा समाज में तभी सच्चे न्याय की स्थापना हो सकेगी।

प्राकृतिक यंत्र वैज्ञानिक ढंग से मनुष्य शरीर व जीवन का समुच्चय है तथा शरीर व जीवन की आवश्यकतायें अलग अलग है। शरीर की आवश्यकतायें जहां निश्चित व सीमित है। वहां जीवन की आत्यधिक एवं असीमित आवश्यकताए है। परन्तु हम आज केवल शरीर की आवश्यकताओं को अनावश्यक बढाने व अनुचित ढग से पूरी करने में लगे है । जहॉ दुसरी ओर जीवन की आवश्यकताओं को हम भूलतें जा रहे है। जो स्वयं मनुष्य के हित में नही है। यही कारण हे कि दुख व समास्या हमारे जीवन का अंग बन गई है जबकि प्रत्येक मनुष्य सुख व शान्ति चाहता है। यह क्यों स्वंय मनुष्य अपनी भूल व नासमझदारी के कारण समझदारी से हमें प्रत्येक समस्या का समाधान खोज सकते है। तथा सुख व शान्ति से जीवन व्यतीत कर सकते है।

अत हम स्वयं दोषी है क्योकि ना समझी से हमने दोषपूर्ण व्यवस्था का निर्माण किया स्वतंत्रता के पश्चात स्वयं हमने पश्चिम की नकल करते हुए इस उधार ली गई व्यवस्था को सर पर ओढ लिया जिसके दुष्परिणाम भयंकर रूप से सामने आ रहे है। पैसे को ही सब कुछ समझकर अनेक समस्यायें खरीद लो। समाज में सुरक्षा व न्याय प्रायः समाप्त हो गया है। एक ओर बीस प्रतिशत लोग अस्सी नब्बे प्रतिशत धन–दौलत के मालिक बन गये है। वहां दूसरी ओर 80–90 प्रतिशत लोगों के पास 10–20 प्रतिशत धन दौलत शेष नही बची है तथा काफी बडी संख्या में लोग गरीबी रेखा के नीच जीवन यापन कर रहे है।

आखिर यह कब तक चलेगा सलुसन पोईन्ट आ गया है। तथा यही कारण है कि अहिंसक आन्दोलन के अभाव में हिसक (नक्सली व माओवादी) गतिविधिया बढती जा रही है। अत अति आवश्यक हो गया है कि श्रम शोषण मुक्ति अभियान जो अहिंसक ढंग से चलाना चाहिये, जो श्री दुबे जी के नेतृत्व में प्रारभ किया गया। यह श्रम शोषण मुक्ति अभियान मील का पत्थर सिद्ध होगा ऐसा मेरा विचार है। मुझे खुशी है कि ज्ञान यज्ञ मण्डल के प्रणेता और प्रसिद्ध समाजशास्त्री बजरंलाल जी इस अभियान को पूरा– पूरा सहयोग करने को तैयार हो गये है।

इस अभियान को चलाने में वही लोग आगे आयेगें जो स्वंय परिवार व समाज का सच्चे हृदय से भला करना चाहते है। आने वाला युग बुद्धिजीवियाँ पूँजीपतियाँ राजनोतिज्ञों व तथा कथित धार्मिक (साम्प्रदायिक) लोगों का न होकर श्रम जीवियों वैज्ञानिकों एवं अध्यात्मवादियों का होगा ऐसा मेरा विश्वास है। यदि सुख व शान्ति से रहना है तो शोषण विहीन अहिंसक समाज की स्थापना करनी होगी जो श्रम शोषण मुक्ति द्वारा ही सम्भव।।